International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 779-780

महाकवि कालिदास की शैव–भक्ति–एक विश्लेषण

डॉ० पूनम शर्मा
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास भारतीय संस्कृति के महान एवं विश्ववन्द्य कवि माने जाते हैं। मां सरस्वती के वरद पुत्र कालिदास भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक एवं उज्जवल कीर्ति के अनुगायक एवं समुन्नायक हैं अपनी अद्वितीय विशेषताओं के कारण ही विश्वसंस्कृति में उनका स्थान सर्वोपरि है भारतीय संस्कृति में न केवल सर्वशक्तिमान भगवान की सत्ता में अटूट विश्वास है अपितु प्राणि मात्र के सुख तथा कल्याण की कामना भी सर्वोपरि है साथ ही साथ समस्त ब्रह्मण्ड के जीवधारियों के कल्याण की मड़ग्लकामना का भाव भी निहित है यथा

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।'

ठीक यही भाव महाकवि कालिदास की कृतियों में भी व्यक्त मिलता है उनकी यही सर्वमड्गलकामना उनकी कृतियों में अभिव्यक्त अभीष्ट शैव भक्ति के रुप में संपन्दित होती है। भगवान शिव इस संसार के मड्गलकारक तत्त्व के ही पर्याय है इसी अर्थ में महाकवि कालिदास शिव की उपासना करते हैं तथा अपने आराध्य शिव उन्हें अत्यंत प्रिय हैं। भगवान शिव की परम भक्ति एवं उपासकता का प्रमाण हमें इसी से प्राप्त होता है कि उनके प्रत्येक ग्रन्थ का प्रारम्भ शिव की स्तुति से होता है उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना 'रघुवंश' महाकाव्य में यूं तो उन्होंने रघुवंशी राजाओं का वर्णन किया है तथापि इस महाकाव्य का प्रारम्भ उन्होंने भगवान शिव एवं भगवती पार्वती के वन्दन से की है यथा –

"वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तयै।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।"[1]

अर्थात विशुद्व शब्दार्थ केपरिज्ञान के लिए शब्द एवं अर्थ की तरह परस्पर संशिलष्ट सम्पूर्ण विश्व के माता–पिता अर्धनारीश्वर भगवान शिव–पार्वती की मैं वन्दना करता हूँ। भगवान शिव के चरित्रों का चित्रण जो उन्होंने 'कुमारसम्भव' में किया है उसकी स्पर्धा किसी अन्य श्रेष्ठतम काव्य में नहीं मिल पाता। जगत्जननी पार्वती तथा वटुवेषधारी श्री शिव का संवाद संस्कृत साहित्य की एक परिगणीय वस्तु है। पार्वती का मनोभाव परखने के लिए श्री शिव की निन्दा करते हुए वटु कहता है–

वपुर्विरुपाक्षमलक्ष्यजन्मता दिगम्बरत्वेन निवेदितं वसु।
वरेषु युद्वालमृगाक्षि मृग्यते तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने।।[2]

इसके उत्तर में पार्वती जी कहती हैं कि वह स्वयं अकिञ्चन हैं किंतु ब्रह्मण्ड की सब सम्पत्तियां उन्हीं से उत्पन्न हुई हैं। वह शमशान में रहतें हैं किंतु तीनों लोकों के स्वामी हैं। वह भयंकर रुप हैं तो भी शिव अर्थात कल्याणकारी–सौम्यमूर्ति कहे जाते हैं शिव के वास्तविक तत्त्व को समझने वाला कोई है ही नहीं[3] कुमार सम्भव के पञ्चम सर्ग में पार्वती को कठोर तपस्या का अत्यन्त सुन्दर वर्णन है।[4] उसी तपस्या के बल पर माता पार्वती को भगवान शिव की प्राप्ति हुई तप किए बिना धार्मिक भावना की उत्पत्ति नहीं होती। इस समस्त संसार में मड्गल का भाव भी इसी तपस्या द्वारा उत्पन्न होता है।

भारतीय साहित्य में गीतिकाव्यों के अन्तर्गत महाकवि कालिदास द्वारा मेघदूत का विशेष स्थान है इस गीतिकाव्य में कुबेर द्वारा श्रापित[5] यक्ष के एक वर्ष के निवार्सित जीवन का ही उल्लेख नहीं है अपितु भगवान शिव की महिमा से ओत प्रोत काव्यरचना है। इस काव्य में कालिदास ने भगवान शिव की महिमा का अत्यन्त उदात्त वर्णन किया है उन्होंने मेघ के माध्यम से भगवान शिव के चरणों अपनी सम्पूर्ण भक्ति समर्पित की है। वृष जो कि महादेव का वाहन है काम का प्रतीक है इसके द्वारा महाकवि संकेत देते हैं कि चूंकि काम शिवजी के वशीभूत है अतः मेघदूत में काम शिव के प्रदेश में विचरण करने का साहस नहीं करता वहां उसे चाप चढ़ाने से भी भय लगता है।[6]

मेघ इच्छाचारी है। आकाश में स्वेच्छा से विचरण करता है। अतः महाकवि ने मेघ को कामरुप प्रकृति–पुरुष कहा है[7] नाटकों की श्रेणी में अभिज्ञान शाकुन्तल नाटक में कालिदास ने नाटक के प्रारम्भ में ही शिव की महिमा का उल्लेख किया है जहां उन्होंने वासना जन्य प्रेम को नकारकर निरन्तर अग्नि में तपित कुन्दन की भांति पवित्र एवं दिव्य प्रेम को स्वीकृति प्रदान की है। नाट्क की नान्दी में उन्होंने महादेव की अष्टमूर्तियों सूर्य, चन्द्र, यजमान, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश का भी उल्लेख किया है जिसका इस संसार में प्रत्यक्ष दर्शन होता है। जिससे विश्व का प्रत्येक कण उनकी सत्ता को द्योतित करता है।

मालविकाग्निमित्र नाटक की नान्दी[9] में जहां उन्होने सामाजिकों के लिए उनकी तामसी वृत्ति के शमन की प्रार्थना की है वहीं विक्रमोर्वशीय नाटक की नान्दी में उन्होंने सभी को निःश्रेयस प्रदान करने की प्रार्थना की है।[10]

उपरोक्त सभी उदाहरणों से सपष्ट है कि महाकवि कालिदास को भगवान का आशीर्वाद मिलने की बात प्राप्त होती है जिसमें यह कहा गया है कि पांच पंडितों ने मिलकर शास्त्रार्थ में विद्योतमा को हरा दिया जिसमें कालिदास को एक मूर्ख व्यक्ति दिखाया गया है और विवाह के बाद जब विद्योतमा कालिदास की मूर्खता को पहचान लेती है तो वह उन्हें कुऍं में ढकेल देती है। कुंए की तलहटी में अवस्थित शिवलिड्ग से जब वह टकराते हैं तो उन्हें शिव का अमोह आशीर्वाद मिलता है तब वह पाण्डितय से परिपूर्ण होकर जब घर वापिस लौटते हैं और दरवाज़ा खटखटाते हैं और कहते हैं कपाटम् उद्घाटय सुन्दरी (दरवाज़ा खोलो, सुन्दरी) विद्योतमा ने चकित होकर कहा – अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः (कोई विद्वान

लगता है) इसी वाक्य को आधार बनाकर महाकवि कालिदास ने 'अस्ति' पद से कुमारसम्भव, 'कश्चिद्' पद से मेघदूतम्, तथा वाग्विशेषः से रघुवंशम् की सचना की। इससे कालिदास की शैव भक्ति प्रमाणित होती है।

संदर्भ

1. रघु॰ 1/1
2. कु॰ सं॰ – 5/72
3. अकिंचन सन प्रभवः स सम्पदां,
   त्रिलोकनाथः पितृसदमगोचरः।
   स भीमरुपः शिव इत्युदीर्यते न
   सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः।। कु॰ स॰ 5/77
4. कु॰ स॰ – 5/6, 7
5. मे॰ दू॰ – पू॰ मे॰ /2
6. मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षद वसन्तं।
   प्रायश्रचपं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम्।। मे॰ दू॰ – उ॰ मे॰/24
7. जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरुपं मघोनः। मे॰ दू॰ पूर्व मे॰/6
8. या सृष्टिः स्त्रष्टुराधा वहित विधिहुतं या हविर्या च होत्री
   ये द्वे कालंविधत्तः श्रुतिविशयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्रम्।
   यामाहुः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः। प्रत्यक्षामि प्रपन्नतनुभिरवतु वस्ताभिरशृाभिरीशः।। – मा॰ अ॰ – 2/2
9. अभि॰ शा॰ –2/2
10. एकैश्रर्ये स्थितोडपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृतिवासाः
    कान्तासंमिश्रदेहौप्यविशयमनसां यः परस्ताद्यतीनाम्
    अषृार्भिस्य कृत्स्नं जगदपि तनुभिर्बिभ्रतो नाभिमानः
    सन्मार्ग लोकनाय व्यपनयतु स वस्तामसीं वृत्तिमीशः ।। – मा॰ अ॰ 1/1
11. स स्थाणुः स्थिरभक्तियोग सुलभो निःश्रेयसायास्तुवः।। – वि॰ उ॰ – 1/1